संक्रांति दान

संन्यास पीठ, मुंगेर, बिहार

संक्रांति दान

सन् 2009 में माँ गंगा के पावन तट पर स्थित पादुका दर्शन, मुंगेर में श्री स्वामी सत्यानन्द जी के आदेश से संन्यास परम्परा के विकास के लिए संन्यास पीठ की स्थापना की गयी। यह संस्था विविध कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के माध्यम से समाज के हर वर्ग के साधकों एवं जिज्ञासुओं को संन्यास की पारम्परिक पद्धति, शिक्षा, दर्शन और सार तत्त्व से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। तांत्रिक एवं वैदिक परम्परा के कुछ गहन अनुष्ठान तथा अस्त्रों के यज्ञ भौतिक जीवन के बंधनों को तोड़कर उच्च दैवी शक्तियों का आह्वान करते हैं और ये केवल उच्च स्तर के संन्यासियों के लिए ही विहित हैं जो पूर्ण निष्ठा के साथ संन्यास पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। संन्यास पीठ के अन्य कार्यक्रम निष्ठावान् गृहस्थ साधकों और जनसाधारण के लिए हैं जो अपने जीवन में सकारात्मक संस्कारों और संस्कृति का अनुभव करके उन्हें अभिव्यक्त करना चाहते हैं।

संन्यास पीठ की गतिविधियों के माध्यम से प्राचीन भारतीय परम्पराओं, दर्शनों, सिद्धान्तों और प्रथाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाता है जिससे व्यक्ति, समाज और पर्यावरण का सुधार और उत्थान हो सके। सन् 2019 में स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की प्रेरणा से संन्यास पीठ में संक्रांति

अनुष्ठान का शुभारम्भ हुआ जिसका प्रयोजन पारम्परिक सूर्य उपासना का पुनरुद्धार और प्रचार-प्रसार है। संक्रांति सौर्य तंत्र का अंग है, जो भारत की पाँच प्राचीन तांत्रिक परम्पराओं में से एक है। दर्शन, साधना या जीवनशैली के रूप में यह ज्ञान आज प्राय: विलुप्त हो गया है, लेकिन बिहार में इसकी शिक्षाओं के कुछ अंश अभी भी जीवित और प्रचलित हैं। चिरकाल से बिहार ने, और विशेषकर मुंगेर के क्षेत्र ने सौर्य परम्पराओं के साथ एक विशेष सम्बन्ध बनाये रखा है। महाभारत काल के राजा कर्ण, सौर्य तंत्र के एक प्रवीण साधक थे, जिन्होंने वर्तमान गंगा दर्शन के स्थान पर अनेक प्रकार की तपस्याएँ और साधनाएँ सम्पन्न की थीं।

संक्रांति दो शब्दों, *सम्* एवं *क्रांति* के मेल से बना है, जिसका अर्थ सम्यक् गति या परिवर्तन होता है। ज्योतिष और खगोल शास्त्र के सन्दर्भ में सूर्य के एक राशि से दूसरे राशि में गमन के दिन को संक्रांति कहते हैं। संक्रांति के समय प्रकृति में नियम और निरन्तरता कायम रखने वाली, तथा सकारात्मक रूपान्तरण लाने वाली शक्तियाँ प्रबल हो जाती हैं। ये शक्तियाँ साधक को प्रकृति के साथ गहन स्तरों पर जोड़ती हैं और इसलिए प्राचीन

काल से यह दिन आध्यात्मिक और परोपकारी कर्मों के लिए शुभ एवं अनुकूल माना गया है।

भारतीय पुरातन शास्त्रों के अनुसार संक्रांति के समय दान का अत्यधिक महत्त्व है। यह दान देने वाले और दान लेने वाले, दोनों के जीवन में मंगलता और कल्याण लाता है। संक्रांति के दिन दिये गये दान का पुण्य शाश्वत और अक्षय माना गया है, इस दान के सकारात्मक प्रभाव जन्म-जन्मान्तर तक चलते रहते हैं। संक्रांति के दिन दिया गया दान सूर्य की प्राण शक्ति से आवेशित और ऊर्जान्वित होता है। दान के समय लिया गया संकल्प सूर्य भगवान की कृपा से शक्तिशाली और सक्षम हो जाता है, जिसके प्रभाव से आरोग्य, आध्यात्मिक ज्ञान और दीर्घायु की प्राप्ति होती है, साथ ही प्राणिक ऊर्जा, नेत्रों की ज्योति, शारीरिक ओज एवं कांति तथा सौभाग्य एवं मांगल्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

प्रत्येक माह स्थानीय समाज के विभिन्न वर्गों एवं समूहों को दान प्राप्त करने के लिए संन्यास पीठ में सादर आमन्त्रित किया जाता है। ये वर्ग समाज द्वारा प्राय: विस्मृत और उपेक्षित रहते हैं, जैसे, कुली,

रिक्शाचालक, ठेलावाले, किसान, सफाई कर्मचारी, आंगनबाड़ी में काम करने वाली महिलाएँ, मोची, बड़ई, लोहार, सब्जी-फल बेचने वाले, स्वास्थ्य कर्मचारी, अखबार विक्रेता, मछुआरे, डोम और ऐसे अभावग्रस्त लोग जिनके पास कुछ भी नहीं है। ये लोग समाज को जो अनवरत सेवा और योगदान प्रदान करते हैं, उसका सम्मान और आदर किया जाता है दान के माध्यम से। प्रत्येक संक्रांति पर उन्हें ऐसी वस्तुएँ दान में दी जाती हैं जो प्राचीन शास्त्रों के अनुसार उस संक्रांति के लिए सबसे उपयुक्त और मांगलिक होती हैं। दान में केवल भौतिक वस्तुएँ ही नहीं दी जातीं, बल्कि श्री स्वामी सत्यानन्द जी के आशीर्वाद का भी आवाहन किया जाता है। सभी के सुख, शान्ति और समृद्धि के लिए श्री स्वामीजी का जो सार्वभौमिक संकल्प था, वही संन्यास पीठ द्वारा निष्पादित प्रत्येक दान कर्म को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है। जो दानवीर सज्जन इस संक्रांति अनुष्ठान में सहयोग देना चाहते हैं वे दान की वस्तुएँ उपलब्ध कराकर अपना योगदान दे सकते हैं।

अगले पृष्ठ पर कुछ ऐसी देय वस्तुओं की सूची प्रस्तुत है जिनका दान संक्रांति के अवसर पर सबसे मंगलकारी और लोगों की आवश्यकतानुसार सबसे अनुकूल एवं हितकारी है।

देय सामग्री

अन्न दान
चावल, दाल, तेल, नमक, शक्कर, पूरे गेहूँ का आटा, गुड़

वस्त्र दान
महिलाएँ – साड़ी, ब्लाउज़, कार्डिगन, टोपी, थर्मल, मोजा, जूता, छाता
पुरुष – कुर्ता, पायजामा, धोती/लुंगी, स्वेटर, बनियान, थर्मल, मोजा, टोपी, मफलर, जूता, छाता

गृह दान
प्रेशर कुकर, हांडी, टोपिया, चकला बेलन, कढ़ाई, तवा, कमण्डल, थाली, गिलास, कटोरी

कम्बल, रज़ाई, चादर, बेडकवर, तौलिया

बाल्टी, मग, स्टूल, कुर्सी, टॉर्च, दरी/कालीन, चटाई

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –
संन्यास पीठ
पादुका दर्शन, पी.ओ. गंगा दर्शन
किला, मुंगेर, बिहार 811201
दूरभाष: +91 09162783904, 09835892831